ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 235-238

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

समाजिक परिवेश में वैश्वीकरण का सैद्धान्तिक विश्लेषण

मधुलिका कुमारी सिन्हा

शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 27.11. 2019, Revised- 30.11.2019, Accepted - 03.12.2019 E-mail: raghu.saifgunj@gmail.com

सारांश : *वैश्वीकरण अथवा भूमण्डलीकरण एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जो भौगोलिक परिवेश और सामाजिक परिमण्डल से सम्बन्ध रखने वाला शब्द है। यद्यपि इस शब्द से उत्पन्न भाव के संवाहक अनेक शब्द पहले प्रयुक्त होते थे, जैसे विश्व–बंधुत्व, वसुधाकुटुंब, अथर्ववेद की भावना 'यत्र विश्वं भवत्येक नीडं' इत्यादि। इस शब्द में समाज, सामाजिक चेतना और सामाजिक अंतःसंबंध का उल्लेख है। आंचलिकता को अतिक्रांत करने वाला शब्द राष्ट्रीयता है और राष्ट्रीयता को भी अतिक्रांत करने वाला शब्द है –वैश्वीकरण। सामाजिक अनुक्रम की दृष्टि से विचार किया जाए तो हम व्यक्ति से आरंभ करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक व्यक्तित्व, परिवेश और परिज्ञान होता है। उससे विस्तृत परिक्षेत्र है परिवार और परिवार से बड़ा अंचल। अंचल से बड़ा राष्ट्र होता है और राष्ट्र से बड़ा विश्व। अंतिम इकाई है अनंत भूमाकाश–ब्रह्माण्ड। मनुष्य के विकास में समाज आवश्यक है और विश्व इस समाज का विकसित और बृहत्तर रूप है।*

कुंजी शब्द– वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, ऐतिहासिक प्रक्रिया, परिमण्डल, संवाहक, आंचलिकता, अतिक्रांत, भूमाकाश

आज वैश्वीकरण का युग है। इस युग में देश–देश के बीच की सीमा गायब हो रही है और पूरा संसार एक गाँव सा प्रतीत हो रहा है। वैश्वीकरण के द्वारा शासन और सत्ता अलग होने पर भी शासकीय सिद्धान्तों में समानता लाने का परिश्रम कर रहे हैं। विकसित, अविकसित और विकासशील देशों में इस नये सिद्धान्त का प्रभाव अलग–अलग प्रकार से पड़ रहा है। 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द हिन्दी में भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, ग्लोबीकरण और जगतीकरण आदि नामों से जाना जाता है।

आज समाज में होने वाली सारी गतिविधियों को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा जाता है। डी० बाबुपोल ने कहा है – "पुराने जमाने में भूमि संबंधी सीमा प्रधान थी। अमेरिका जाने के लिए भारत छोड़ना था; लेकिन आज भूमि संबंधी सीमा कम होती जा रही है। आर्थिक सीमा की शक्ति बढ़ती है। अमीर गरीबों को भूल जाते हैं। गरीब अमीरों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।" समाज, संस्कृति और राष्ट्रों के बीच जो दूरी थी, उसे कम करना वैश्वीकरण का लक्ष्य है। संसार को विश्व ग्राम और विश्व परिवार में बदलना इसका उद्देश्य हो गया है। चाहे यह वैश्वीकरण नाम नया हो, लेकिन इसकी शुरुआत पुराने जमाने में हुई थी। मानव नागरिकता के समान वैश्वीकरण भी बहुत प्राचीन है। मानव समाज के बीच की दूरी को दूर करने का प्रयास बहुत पहले ही हुआ था। ऐ०के० अब्दुल रशीद बताते हैं – "यह मानवीय इच्छाओं को सार्वलौकिक बनाकर सीमा के बाहर लाने का श्रम है। इस सीमा से तात्पर्य भौतिक सीमा से है। इससे संसार भर के लोगों को समानता का अवसर मिलेगा और आर्थिक दृष्टि से सभी समान हो।

वैश्वीकरण अपनी पूर्णता में पहुँचते वक्त राष्ट्रों के बीच के संघर्ष और युद्ध समाप्त हो जायेगा।" वैश्वीकरण के जरिये राष्ट्रीय सरहदों की अलंघनीयता से पूरा विश्व एक होने की संभावना है। "वैश्वीकरण के पीछे संसार भर को एक बनाने की कामना है।" साधारण शब्दों में वैश्वीकरण 'देश की अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना' है। राष्ट्रों की सीमाओं के कारण पहले श्रम की पूँजी का बेरोकटोक आवागमन संभव नहीं था। इसलिए दुनिया भर में धीरे–धीरे आर्थिक–राजनीतिक दबाव डलवा कर इस प्रवाह के रास्ते की बॉधाओं को हटाना जरूरी था। राष्ट्रातीत पूँजी की संरचनाओं के रूप में बहुदेशीय निगमों का बोलवाला स्थापित किया जाना अनिवार्य था। "भूमण्डलीकरण ने यह दावा भी किया है कि राज्यों और राष्ट्रों की सरहद अब महत्त्वपूर्ण नहीं रह गयी है।"

आज के वैश्वीकरण की जमीन सत्तर के दशक में पक रही थी। हथियारों की होड़ और अन्य अनेक कारणों से दुनिया एक ध्रुवीय हो रही थी। पहले अस्सी के दशक में उत्पादन का वैश्वीकरण हुआ, जिसकी अगुआई बहुदेशीय निगमों के हाथ में थी। डॉ० भूपेन्द्रराय चौधरी की राम में "अब भूमण्डलीकरण का अर्थ है सारी दुनिया को एक ही रंग में रंगाना। स्पष्ट रूप में कहा जाए तो अमेरिकी संस्कृति और जीवन–शैली को सारे संसार में लादना।" यह एक सच्चाई है कि घरेलू आर्थिक मोर्चे पर कमजोर पड़ जाने और पश्चिमी यूरोप की चुनौतियों से घिरे होने पर भी भूमण्डलीकरण के केन्द्र में अमेरिका ही है। यह व्यवस्था सारे संसार को कुछ सशक्त पूँजीवादी संस्थाओं यॉनि बहुदेशीय कम्पनियों और उनके सबल केन्द्र अमेरिका के हितों की

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

रक्षा का माध्यम बनी हुई है। यह सिर्फ व्यापार के लिए दुनिया को एक करना चाहती है।

वैश्वीकरण तो एक विश्व अर्थतंत्र का निर्माण है। यह विश्व अर्थतंत्र और विश्व बाजार के निर्माण में प्रत्येक राष्ट्र को जुड़ना होगा। सी०बी० सुधाकरन की राय में– "आज जब स्वतंत्र व्यापार की बात होती है उसका एकमात्र अर्थ होता है सशक्त व्यापारिक संस्थाओं के लिए उन सारे क्षेत्रों को खोल देना जो अब तक इनकी पहुँच के बाहर है। शोषण का नया ढाँचा है वैश्वीकरण।" मानवता इस वैश्वीकरण से लाभान्वित हो रही थी, लेकिन समान रूप में नहीं। उसका बड़ा हिस्सा उपनिवेशवादी देश हड़प जाते थे।

वैश्वीकरण नवीनतम सिद्धान्त नहीं है। सदियों से पहले

वैश्वीकरण की अवधारणा हुई थी। वैश्वीकरण शब्द अंग्रेजी शब्द Globalization का पर्यायवाची शब्द है। Global शब्द ही परिवर्तन का सूचक है। सन् 1960 में इसका प्रयोग दुनिया से संबंधित या पूरे संसार के अर्थ में किया था। मार्शल मावलुहान, 1964 में इसका प्रयोग विश्व ग्राम के लिए किया था। सूचना और संचार माध्यमों के आविष्कार के पहले ही उन्होंने संसार भर को एक रस्सी में पिरोने की कामना की थी।

आफ्रिकी लोगों के उपनिवेश से वैश्वीकरण की शुरूआत मान सकते हैं। दूसरी तरह से कहें तो 5वीं और 6वीं सदी के सौराष्ट्रिसम और बुद्धिजम नामक दो धर्म के द्वारा इसका आर्विभाव हुआ। सन् 1776 में प्रकाशित एडम स्मिथ की पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन' में पूँजीवादी व्यवस्था एवं स्वतंत्र व्यापार के बारे में बताया है। प्रस्तुत रचना के अनुसार वैश्वीकरण का आरंभ 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में माना जा सकता है। अटलांटिक महासमुद्र को पार करनेवाला प्रथम तार सन् 1866 में आया। इस सदी के अन्त तक आते–आते संसार तार से बँध गया। एक दूसरे से संबंधित होने के लिए महीने का स्थान मिनट अपनाया। 19वीं सदी में तार, दूरभाष, वैश्वीक बाजार, वैश्विक ब्रान्ड नाम, वैश्विक संघ, सामाजिक आन्दोलन, नारीवादी क्रियाकलाप आदि के द्वारा वैश्विक सम्बन्ध बढ़ गये। 19वीं सदी के अन्त में इन सब की प्रगति कोलनीय सत्ताधारियों की उन्नति का भी कारण बना। वैश्वीकरण में बहुत अधिक प्रगति पिछली आधी सदी में हुई। जेट हवाई जहाज, उपग्रह, दूरदर्शन आदि का प्रयोग बहुत बढ़ गया। आजकल समाज सबसे अधिक वैश्विक हो रहा है।

भारत वर्ष के लिए वैश्वीकरण की कल्पना वैदिक युग से रही थी। 'आ न भद्रः क्रतवो यन्तु विश्वतः' की उद्घोषणा होती रही – जिसमें विश्व को सुसंस्कृत कराने का संकल्प है। 'सर्वे सुखीन संतु' में सर्वहित की मानसिकता है, न कि किसी को दुःख पहुँचाना या शोषण करना। रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुत पहले विश्व मानव की अवधारणा पर बात कर चुके थे। इसके पीछे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना है।

हमारे वैदिक विचारों के अनुसार मनुष्य कामों (इच्छाओं) का भण्डार है। जिसके कारण वह दुबारा जन्म लेता है। जो मनुष्य इन इच्छाओं से मुक्त होता है, वह 'ब्रह्म' में विलीन होता है। ब्रह्म विश्व का सूचक है। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत यह वैश्वीकरण की भावना निहित है। "वैश्वीकरण उदारता से बहुत अधिक जुड़ा हुआ है। यह कर्म का और कर्म के सही आचरण का प्रतिनिधित्व करता है। जो अंत में हमें मोक्ष की ओर ले जाता है। अर्थात् परहितवाद भगवद्गीता का मूल तत्व है। यह उनका धर्म है जो उन्हें पुण्यवान बनाते हैं।" दूसरों के लिए जीने की भावना भारत के वर्णाश्रम धर्म की मूलभूत चेतना है। आर्यो के आगमन के बाद प्रत्येक जनता को अपने काम के अनुसार चार वर्णो में विभाजित किया गया – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इनमें प्रत्येक जाति अपने काम में निपुण थे। दूसरों की भलाई के लिए प्रयत्न करने की भावना वैश्वीकरण का भी आधार है।

वैश्वीकरण तो एक तरह से यज्ञ है। यज्ञ निम्न प्रकार से किया जाता है – देव यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृयज्ञ और भूत यज्ञ। हमारे दर्शन में बताया है कि जो मनुष्य सभी को समान दृष्टि से देखता है वह ब्रह्म पद प्राप्त कर सकता है। विश्व ग्राम की भावना के पीछे भी 'अहं ब्रह्मास्मि' की भावना ही है। समाज की सारी मुसीबतों का कारण अनियमित धन, शक्ति, सम्पत्ति आदि है। हमारे दर्शन में बताया है कि आत्म साक्षात्कार मिलने के लिए सबों को एक समान देखना है। 'एकास्मित्व बोध', 'अद्वैतवाद', 'तत्वमसि', सोहं ब्रह्मास्मि' आदि के पीछे भी 'परमात्मैक्य बोध' या विविधता में एकता की भावना ही है।

आज के वैश्वीकरण के पीछे परहितवाद नहीं है, स्वार्थता है। उसमें दूसरों को लूटने की भावना है। आज जिस वैश्वीकरण का डंका बज रहा है वह उक्त 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संकल्पना से एकदम अलग है। यह तो बाजारवाद को बढ़ावा देकर इन्सानों के बीच दूरी पैदा कर रहा है। आज की दुनिया में देश की हैसियत इतनी घट गयी है कि वे अपनी सत्ता का पूरा इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता खो चुकी है। सत्ता हावी होती चली जा रही है। इतना ही नहीं भारत जैसे तीसरे देश इन बहुराष्ट्रीय निगमों की गतिविधियों को ठीक रूप से निगरानी करने का कोई काम नहीं किया है।

वैश्वीकरण के सोपान– मनुष्य पौराणिक काल से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

ही भौगोलिक सीमाओं को लांघकर दूर तक चलने का प्रयास करते थे। यदि पिछले चार–पाँच सदियों को ध्यान में रखें तो हमें पता चलेगा कि वैश्वीकरण के तीन सोपान हैं– वे हैं उपनिवेशवाद, उपनिवेश से छुटकारा पाये देशों की आर्थिक समस्या और उपनिवेशवाद का पुनर्जन्म।

उपनिवेशवाद– क्रिस्टाफर कोलम्बस के पर्यटन से लेकर बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक के काल में पाश्चात्य देशों ने तीसरें राष्ट्र कहे जाने वाले राष्ट्रों में विशेषकर एशिया, अफ्रिका, लैटिन अमेरिका आदि क्षेत्रों में अपना अधिकार जमाया था। इसका पहला कदम व्यापार था। इसमें प्रमुख थे हाथी दाँत, सोना, चाँदी आदि का व्यापार। सन् 1870 से सन् 1914 के बीच के इस जमाने को उन्मुक्त बाजार कह सकते हैं। इस समय पूँजी और श्रम के आवागमन पर कोई खास रोक नहीं था। कोई कहीं भी बस सकता था। बाजार के कारोबार में सरकारी दखलन्दाजी नहीं के बराबर थी। प्रथम विश्व युद्ध ने वैश्वीकरण के इस सिलसिले को बदल दिया। राष्ट्रीय क्रांतियों ने साम्राज्यों को पीछे ध ाकेल दिया। राष्ट्रों की सरहदें पूँजी और श्रम के बेरोकटोक प्रवाह को यह परिस्थिति ने कठिन बनाया। द्वितीय युद्ध से दुनिया दो हिस्सों में बँट गयी।

आर्थिक स्वतंत्रता की समस्या– उपनिवेशवाद से छुटकारा पाकर सारे देश अपने पाँव पर खड़े होने के लिए परिश्रम करने लगे भारत की पंचवर्षीय योजनाएँ इसके उदाहरण हैं। सन् 48–73 के काल को पूँजीवाद का सुवर्ण युग माना जाता है। तेल समस्या, ऋण समस्या आदि के कारण तीसरे राष्ट्रों की आर्थिक स्वतंत्रता कुछ हद तक बिगड़ गयी। यहाँ से तीसरे पड़ाव का आरंभ होता है।

उपनिवेशवाद का पुनर्जन्म– आज का वैश्वीकरण उपनिवेशवाद का पुनर्जन्म है। यह खुला आक्रमण या औपचारिक राष्ट्रीय अधीनता के बिना कुछ अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सबके ऊपर अधिकार जमाने की वर्तमान स्थिति है। वैश्वीकरण के विचारों में उपनिवेशीकरण का भाव आया है। मानवीयता, भाईचारा आदि सारे भाव खोखले हो गये। हर एक वस्तु का मूल्य उपभोग पर आधारित हो गया है। भारतीय समाज में उपनिवेशीकरण देश की स्वतंत्रता के साथ समाप्त नहीं हुआ। न केवल भारत में, बल्कि समस्त देशों में नये ढंग से उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया जारी हुई है। साम्राज्यवादी शक्तियाँ समस्त दुनिया को नयी कोलनी बनाने के लिए तत्पर थी। इसका विरोध भी स्वाभाविक जान पड़ता है।

आशीष नंदी की राय में – "भूमण्डलीकरण की मौजूदा शक्तियाँ इसके पहले वाली ताकतों से गुणात्मक रूप से भिन्न है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पहले भी थी। ब्रिट्रिश और डच ईस्ट इण्डिया कम्पनियाँ तकनीकी रूप से बहुराष्ट्रीय ही कही जायेगी। एशिया के कुछ देशों पर उनकी काफी अरसे तक हुकूमत रही है। इसलिए उनकी सत्ता भी कोई नयी बात नहीं है। हम पिछले दो सौ साल से देख रहे हैं कि ये कंपनियाँ कैसे काम करती है। शायद नयी बात यह है कि इसके बाद वे सीमाहीन उपभोग के जरिए नये किस्म के सांस्कृतिक विनिमय को प्रोत्साहित कर रही है।"

कोई भी उपनिवेशीकरण के नाम पर आज दूसरे देश पर अधिकार नहीं जमाते। के०एन० पणिक्कर की राय में – "आज उपनिवेशीकरण के नाम पर किसी साम्राज्य की स्थापना प्रत्यक्ष रूप में नहीं हो रही है; लेकिन इसके लिए अदृश्य औजार बनाते हैं। गाट और अन्य समझौते इसके हथियार हैं। नये उपनिवेशवाद की यह आदत ठीक रूप से समझना है। यदि इसके बारे में ठीक रूप से अवगत नहीं होगा तो इसकी प्रतिक्रिया भी सफल नहीं होगी।" कुछ लोग मानते हैं कि उदारीकरण और वैश्वीकरण हमारी आर्थिक दिक्कतों से छुटकारा दिला देंगे। वैश्वीकरण राज्य की ताकतों के क्षय में परिणत हो गया है। देशों का आर्थिक अस्तित्व पहले का जैसा नहीं रह गया। अनेक देश जरूर संकट में है। हर देश को एक बदलती हुई दुनिया का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण उसके ऊपर तरह–तरह के दबाव पड़ रहे हैं।

वैश्वीकरण कल और आज–वैश्वीकरण नाम तो अब प्रचलित हुआ है। लेकिन पूँजीवाद के उदय से ही सभी पूँजीवादी संस्थाओं की महत्त्वाकांक्षा पूरे विश्व में अपना वर्चस्व फेलाने की रही है। औद्योगिक क्रांति से जब उत्पादन की मात्रा का तेजी से विस्तार हुआ तो अपने देश की सीमा से बाहर व्यापार फेलाने की जरूरत महसूस की जाने लगी। स्वतंत्र व्यापार के सिद्धान्त की घोषणा अट्ठारहवीं शताब्दी से होने लगी। सन् 1870 से सन् 1920 तक का समय विश्व समाज की बनावट का था।

निष्कर्ष –वैश्वीकरण पूँजीवादी व्यवस्था का अत्यंत आधुनिक एवं विस्तृत रूप है। मुक्त व्यापार व्यवस्था अमेरिका के नेतृत्व के विकसित देशों का विकासशील एवं गरीब देशों को लूटने का एक आसान रास्ता है। ये आर्थिक उदारीकरण प्रक्रिया को लागू करने के लिए गरीब देशों की सरकारों पर दबाव डालते हैं। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष1, विश्व व्यापार संगठन आदि साम्राज्यवादी देशों के साझेदार हैं और इनकी नीतियाँ उनके अनुकूल है। इन साम्राज्यवादी देशों ने गरीब देशों पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध भी लगा दिये हैं। उदाहरण के लिए जब भारत ने पोखरन में अणु विस्फोट किया था, तब अमेरिका ने आर्थिक प्रतिबंध लगाया।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

बहुत दूर रहते हुए, पूरे विश्व को एक तरह देखने की बात कहकर ये शक्तियाँ हम पर रिमोट कंट्रोल चलाते हैं। अब निजीकरण के परिणामस्वरूप सरकारी नौकरियों की संख्या में कमी आयी है। आधुनिक तकनीकी और नवउदारवादी नीतियों ने बड़े पैमाने में घरेलू और लघु उद्योगों को नष्ट कर दिया है। ग्रामीण लोग बेरोजगार हो रहे हैं। इसका सबसे बुरा असर दलितों पर पड़ा है। भारतीय किसान ऋण बोझ के नीचे दबा हुआ है। किसानों की ऋणग्रस्तता ने देश के कई प्रदेशों में किसानों द्वारा आत्महत्या करने का दौर शुरू कराया है। यह सही है कि वैश्वीकरण का बुरा प्रभाव समूची जनता पर पड़ा है। लेकिन सबसे ज्यादा इसका बुरा प्रभाव भोगनेवाले औरत ही है। वर्तमान युग में नारी पूर्णतः एक बिकाऊ वस्तु के रूप में परिवर्तित हो गयी है। उसे कभी भी पुरूष के समान स्थान नहीं दिया गया। उसका अस्तित्व पुरूष सापेक्ष रहा।

साम्राज्यवादी शक्तियों के आर्थिक सत्ता के खिलाफ आवाज उठानेवाले देशों पर सूपर 301 जैसे कानूनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत जैसे देशों पर अपने पेटेंट कानूनों को बदलने के लिए दबाव डाल रहा है। जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक सम्पदा वैश्वीकरण के दायरे में आ सके। अब हमारे सरकारों को भी यह सोचने का हक नहीं रह गया कि अपने देशों की जनता के लिए क्या अच्छा है। एक बार इस जाल में फँसनेवाला देश इसके बाहर निकल भी नहीं सकता। निस्संशय हम यह कह सकते हैं कि वैश्वीकरण ने इन्सान की आत्मा को भी कुचल रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाबुपोल. डी– अतिरूकलिल्लाता लोकम – मलयालम, पृ० 7।
2. अब्दुल रशीद, ऐ.के. – आगोलवतक्करणवुम अतिरूकलुटे अंत्यवुम – मलयालम, पृ० 217।
3. वेंकटेशलु. सी. – Human Resources Development in the context of globalization, p. 67A
4. दुबे अभयकुमार – भारत का भूमंडलीकरण, पृ० 34।
5. चौधरी भूपेन्द्रराय डॉ. – भूमण्डलीकरण तथा हिन्दी आदि अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के अस्मिता का प्रश्न, राष्ट्रभाषा, मई – 2006, पृ० 11।
6. सुधाकरन, सी.बी. – नवसिद्धान्तडल, उत्तराधुनिकता – मलयालम, पृ० 44।
7. दुबे अभयकुमार – भारत का भूमंडलीकरण, पृ० 396।
8. पणिक्कर, के.एन. – कोलोनियलिसम, संस्कारम, पारम्पर्य बुद्धिजीविकल – मलयालम, पृ० 155।
9. सिन्हा सच्चिदानन्द, डॉ० – भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ, पृ० 38।
10. दुबे अभयकुमार – भारत का भूमंडलीकरण, पृ० 168।
11. खेता प्रभा – भूमण्डलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, पृ० 14।
12. विश्वनाथन शिव – दि प्रोब्लम – सेमिनार – ग्लोबलैजेशन पर विशेष अंक – जुलाई, 2001, पृ० 403।
13. दुबे श्यामचरण – उपभोक्तावादी संस्कृति, क्षितिज – भाग– 1, नई दिल्ली, एन.सी.आर.टी. – पृ० 35।

*****